DESHAJ
RANG MANDAP

E-7-86, Manas Place
Arera Colony, Bhopal (M.P.) India
E-mail : hannisingh000@gmail .com
hrkharsh111@gmail .com
Mob.: 08085565576

Date : 17/08/2016

SCHEME FOR "SAFEGUARDING THE INTANGIBLE CULTURAL HERITAGE AND DIVERSE CULTURAL TRADITIONS OF INDIA" 15-16

To

The Secretary
Sangeet Natak Academy
ICH Section
Ravindra Bhawan
Feroz Shah Road
New Delhi- 1

Subject :- 28-6/ICH- Scheme/66/2015-16 के रिपोर्ट प्रस्तुत करने बाबत्।

Respected Sir,

संगीत नाटक अकादमी के ICH 'स्कीम' के लेटर नं. 28–06/ICH-Scheme/66/2015–16 के अंतर्गत 'देशज रंग मण्डम' द्वारा 'नटुआ नाच' के संरक्षण एवं संवर्धन पर कार्य किये जा रहे क्रिया–कलाप का प्रथम रिपोर्ट भेजा जा रहा है। कृपया इसे स्वीकृत करते हुए सेकेण्ड स्टॉलमेंट प्रदान करने की कृपा प्रदान करें, ताकि अग्रिम कार्यवाही को सुचारू रूप से सुनिश्चत किया जा सके।

नोट– रिपोर्ट संलग्नित।

DESHAJ RANG MANDAP BHOPAL PRESIDENT

अध्यक्ष, देशज रंग मण्डप

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र

1. योजना का कार्य क्षेत्र– श्रीरामपुर, नेपाल का तराई क्षेत्र– परसा (बिहार), नेपाल
2. परम्परा का नाम– पारम्परिक नटुआ नाच
3. सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा– आदापुर, हिन्दी एवं भोजपूरी
4. संलग्नित
5. भोगोलिक क्षेत्र– आदापुर मोतिहारी का आदापुर प्रखण्ड एवं नेपाल का परसा जिला
6. चरण क्रमांक 06 से 21 तक रिपोर्ट में संलग्नित

पारम्परिक 'नटुआ नाच' से जुड़े समुदायिक संगठन

ग्राम :– श्रीरामपुर

नाम :– सेवक राम एण्ड पार्टी

मुखिया :– सेवक राम

पद :– संचालक

पता :– ग्राम : श्रीरामपुर, पोस्टः आदापुर, जिला : मोतिहारी, बिहार

फोन नं. :– 08084616455 : श्याम बालक राम, संयोजक

हस्ताक्षर.....

नाम व पदनाम– सेवक राम (संचालक)

संस्थान का नाम– सेवक राम एण्ड पार्टी

पता– ग्राम : श्रीरामपुर, पोस्टः आदापुर, जिला : मोतिहारी, बिहार

हमारी धरोहर नटुआ नाच

जैसा कि हम सब जानते हैं कि दुनिया भर के लोक परॅपराओं का आविर्भाव धार्मिक अनष्ठानों और सामाजिक उत्सवों से ही हुआ है। यूनान में जिस तरह डायनीसस के पूजा के अवसर पर वेदी के सामने पचास या इससे अधिक व्यक्ति कोरस में देवताओं का गान करते थे और उसी के साथ युद्ध, संघर्ष, ब्याध, पाप सत–असत के आख्यान होते थे, आगे चलकर यही कोरस गायन के साथ साथ अभिनय भी करने लगे और उनकी यह कला पारम्परिक कला के रूप प्रतिस्थापित होता गया।

संक्षिप्त परिचय :– नटुआ नाच का मुख्य केन्द्री उत्तर बिहार रहा है। प्राचीन काल में वैदिक शिक्षा, न्याय, दर्शन आदि विद्याओं का प्रमुख केन्द्र, यही क्षेत्र खासकर मिथिलांचल था। लोग वैदिक धर्म को मानते थे। कालान्तर में कभी बौद्ध, कभी शैव, नाथपंथ और वैष्णव आदि मार्गो को समाज ने अपनाया। इन मार्गो को अपनाने में समाज में गहन चिन्तन हुआ। इसके परिणामस्वरूप अनेक विद्याओं में इस चिन्तन को जगह मिली। इन्हीं विद्याओं में एक बहुत ही लोकप्रिय और प्रबल विद्या थी लोकगाथाएं। गोपीचन्द, भरथरी, सोरठी–बृजभान, ये नाथपंथ की लोकगाथायें हैं, तो बिहुला– बिसहरी, शाक्त और शैव के संघर्ष की गाथाएं है, जिसका प्रदर्शन नटुआ अपने नाच के कथानक में करता है। नटुआ नाच के कथानक में सत्य हरिशचन्द्र तथा नल जैसे आदर्श चरित्रों की जीवन गाथा भी समाहित रहता है। ये सर्वविदित है कि राजा हरिश्चन्द्र और 'राजा नल' ऐसे पौराणिक चरित्र हैं जो लाख दुख सहने पर भी, कठिन से कठिन परिस्थिततियों में भी अपने सत्य और आदर्श के रास्ते से नहीं हटे।

व्यवहारिक शोध :– भारत में भी विभिन्न लोकनाट्यों का उद्‌भव आनुष्ठानिक क्रिया से ही हुआ है इसलिए इन लोकनाठ्यों के कथानक के केन्द्र बिन्दु में धार्मिक, अनुष्ठानिक क्रियाएं ही रही हैं। नटुआ नाच के कथानक अधिकांश रूप में लोक गाथाओं पर आधारित होता है। हॉलाकि इसें भी धार्मिक अनुष्ठानों का समावेश रहता है। नाच का आरंभ ही देवी–देवताओं के सुमिरन और उनकी महत्ता–गायन से होता है, भोजपुर के नटुआ नाच और मिथिलांचल के नटृआ नाच में बहुत फर्क देखा जा सकता है। मिथिलांचल के नटुआ नाच के बारे में ही आमतौर पर हमारे यहाँ के शोधकर्ता और नाट्यकर्मी अवगत है और उसी को लटुआ नाच मान लिया गया है। जब हम भोजपुरी आंचल के नटुआ कलाकारों से मिले और उनसे नटुआ नाच के बारे में जिक्र किया तो उन्होनें नटुआ नाच के कथानक में, समाज के विभिन्न समस्याओं से लकर पौराणिक कथाओं और आनुष्ठानिक प्रसंगों का प्रस्तुति का हिस्सा बताया। मसलन–आजकल के राजनीतिक हालात, ऊँचनीच (जातिगत समस्या), गांव की छोटी–छोटी पारिवारिक, सामाजिक जैसे– सास–पतोहू का झगड़ा, भाई–भाई में सम्पत्ति विवाद घटनाएँ वगैरह–वगैरह। नटुआ कलाकरों का मानना है कि वे सभी समस्याओं पर रात–रात भर गायन और अनुकृति के माध्यम से नाच कर सकते हैं।

इसी तरह **आनुष्ठानिक** प्रसंगों में वर्षा के लिए जो अनुष्ठान किए जाते हैं, उसके बारे में गायन करके और अनुष्ठानिक क्रियाओं से (Mime) माईम की अनुकृति करके नटुआ नाच की प्रस्तुति की जाती है। वैसे ही छठ पर्व के अवसर पर 'छठ कथा' के आख्यान् प्रस्तुत

किये जा सकते है। हाफलाकि भोजपुरी आंचल में नटुआ नाच की प्रस्तुति में अनुकृति की क्रियाएँ सफाई से प्रस्तुत नहीं हो पाती लेकिन कहानी में कहीं कोई रूकावट या बेमेलता नहीं होती है। ऐसे ही तमाम छोटे–छोटे जो संस्कार व धार्मिक अनुष्ठान वगैरह उत्तर बिहार में होते हैं, जैसे– फसल कटाई पर देवताओं को प्रसन्न करने के गीत, स्थानीय देवी–देवता–नीमियामाई, बहुधीमाई, मंसामाई, भिण्ड बाबा, कटेगन माता, जौंहरीमाता इत्यादि के खुश रहने पर ही गांव–नगर में खुशहाली रह सकती है। अतः समय और स्थान के मुताबिक इनके अलग–अलग गुणों उनके महिमा का आख्यान भी नटुआ अपनी प्रस्तुति में प्रयुक्त करते है।

पौराणिक लोक–गाथाओं में बहुधा, विहुला–विषहरी लोरिक, भरथरी, गोपीचन्द्र, सत्यहरिशचन्द्र, सोरठी–बृजभार इत्यादि कथानक प्रस्तुत किये जाते हैं। अनुमानतः इन कथानकों के मंचन की शुरूआत 15वीं शताब्दी के आसपास की हैं।

चूंकि सलहेस नटुआ नाच का अति लोकप्रिय और सशक्त कथानक है। लेकिन सलहेस, रेशमा, चुड़ामल, नौका, बनिजरा जैसे कथानकों का मंचन भरथरी, सोरठा बृजभार, गोपीचन्द्र आदि के बाद का प्रतीत होता है। क्योंकि सलेहस, रेशमा–चुड़मल जैसे कथानकों का मंचन सोलहवीं से अठारहवीं सदी के बीच का लगता है। भरत मुनि के नाट्य शास्त्र में विस्तारपूर्वक नाट्य प्रस्तुति के विधानों और प्रयोगात्मक अनुष्ठानों का विवरण दिया गया हैं अतः यह मान लेना युक्तिपरक लगता है कि उससे पहले नाट्य प्रस्तुतियाँ होती थी।

क्षेत्र और समय :– बिहार के भोजपुर इलाके, खासकर चम्पारण जिले के नटुआ चैत्रमास के नवरात्रि की समाप्ति पर रामनवमी पर लगने वाले मेले में धार्मिक या पौराणिक कथानकों का मंचन करते हैं। रामनवमी के अवसर पर प्रायः हरेक पंचायत में उत्सव के रूप में मेला लगता है। चम्पारण जिले के मैदानी क्षेत्र में कहीं–कहीं टीलानुमा स्थान पाया जाता हैं, जो लगता है कि बाढ़ के कटाव या पृथ्वी के किसी हलचल के कारण एक जगह पर मिट्टी या पत्थर इकट्ठा होकर पहाड़ का शक्ल ले लिया होगा। लगता है मैदानी जगह में किसी ऊँचे स्थान का पाया जाना लोगों में कौतूहल का विषय रहा होगा, जिसे लोगों ने इस स्थान को देवी–देवता का स्थान मानकर, वहाँ छोटे–छोटे मंदिर का निर्माण कर लिया गया होगा। रामनवमी का मेला सामान्यतः ऐसे ही स्थान पर लगता है और हर साल इस स्थान पर मेले में नट्आ नाच का होना लाजमी है। मोतिघरी जिला में एक गांव है 'रतनपुर–रघौता', वहाँ से कुछ दूरी नी बरसाती छोटी सी नदी हैं, ठीक उसी के किनारें पर एक पहाड़नुमा जगह है, जिसे वहां के रहने वालों ने **"भीस बाबा"** का नाम दिया है। इसी भीस बाबा पर हरेक साल नटुआ नाच का प्रदर्शन होता है। चूंकि इस इलाके में यद वक्त रबी कटाई (रबी फसल) का मौसम होता है, इसलिए इस महीने में प्रायः खेत खाली हो जाता हैं, तो रामनवमी के वक्त खुला खेत भी नटुआ नाच का प्रदर्शन स्थल बन जाता हैं। इस वक्त इस इलाके में खेती का काम प्रायः ठप्प रहता है या कम रहता है। चूंकि नटुआ नाच के कलाकार मजदूर वर्ग से ही आते हैं। इसलिए **'नटुआ नाच समुदायों** की संख्या इस वक्त ज्यादा देखने को मिलती है। एक

मुलाकात नटुआ नाच के बहुत पुराने कलाकार **'जनक बैठा'** से नटुआ नाच के कथानक को लेकर बात की तो उन्होंने बताया कि कोई भी ऐसा घटना या कथा नहीं है जो हम लोग प्रस्तुत नहीं कर सकते।

प्रश्न – जइसे कुछेक के नाम बताई ?

उत्तर – महाभारत के कवनो घटना ले ली या रामायण के कवनों प्रसंग जइसे–लवकुश, सीता हरण, बालि–सुग्रीव प्रसंग, लक्ष्मण के शक्ति बाण, राम–रावण युद्ध, अइसने कतको प्रसंग बा जेला दर्शक के इच्छा नुसार प्रस्तुत कइल जाला। एकरा अलावा बिहुला या भरथरी के कथा भी प्रस्तुत करे निसन। समय और जगह के अनुसार दर्शक के फरमाइश पर कवनो कथा प्रस्तुत कर लेनीसन। रामनवमी के अवसर पर त अक्सर धार्मिक अऊ पौराणिक कथा ही उठावलजाला। वइसे मनी के बिहुला नाच ही लोक–बाग जादा पसंद केरला।

प्रश्न – सामाजिक अऊ राजनीतिक घटना पर भी नाच करीलें लोगन ?

उत्तर – अउर का। अब देखी परसों हमर नाच सेनवरिया गांव में एक छट्ठी पर बा। अब जईसन लोक चाही, हमनी वइसने घटना पर नाच कर लेमसन। जइसे कहीं अगर चुनाव के समय बा त तब कुछ भजन–वजन गावला के बाद लोग (दर्शक) चाहे ला कि राजनीतिक पार्टी अऊर नेता–वेता लोग के करतूत पर कुछ हास्य–व्यंग्य पेस कहल जाये अऊ वा ही पर कुछ गायन–वायन दिखाव ले जाय।

कार्य व्यापार :– वैसे नटुआ नाच के कथानक **लोक गाथाओं** पर ही आधारित होते हैं। और अधिकांशत कथानक लोक गाथाओं से लिए गए हैं। लेकिन वीर रस के कथानक, प्रेम पर आधारित आख्यान या पौराणिक या धार्मिक गाथाओं के अतिरिक्त सामाजिक घटनाओं का मंचन नटुआ अपनी प्रस्तुततियों में करते हैं। यह मंचित होने वाली अधिकांश गाथाएं मध्यकालीन या पूर्व मध्यकालीन की सामाजिक घटनाओं पर आधारित होती है। मध्यकालीन समाज राजनीतिक रूप से छोटे–छोटे टुकड़ों में बँटा हुआ था। अक्सर समाज केन्द्रीय सत्ता से अलग–थलग था, जो भी राजा या सुल्तान होता था वह सूबे को छोटे–छोटे टुकड़ों में विभाजित कर जागीरदार और सामंतो के अधीन कर देता था। सिर्फ कर उगाही और इसके चलते दण्डात्मक निर्णय ही उनका मुख्य काम था। इसके विरूद्ध कई संगठित और असंगठित विद्रोह भी हुआ करते थे, जिन्हें निर्ममता से कुचल दिया जाता था लेकिन इनका प्रभाव लोक मानस पर 'अनकांसेस' रूप में पड़े बिना नहीं रहा। सामन्तों, जागीरदारों के खिलाफ आवाज उठाने वाले समाज के नायक (Hero) अब इन नायकों के जीवन चरित्र पर इलाके के लोक कवियों ने कई संघर्ष गाथाओं की रचना की, जो लोकगाथा के रूप में अधिकतर लोगों को मुखाग्र है। नटुआ नाच की प्रयोक्ता भी इसी वर्ग से ये लोक नायक और लोक कवि थे और इन्होंने लोक मानस को जोड़कर जो सामन्तों के अत्याचार से पीड़ित थे, उन्हें इन गाथाओं को श्रव्य रूप में बताकर आशुरचना (Improvisation) द्वारा बड़ी सहजता से अपने संघर्ष के वीरगाथाओं का नाट्य रूपांतर किया, और सर्वहारा वर्ग के दर्शकों के सामने

प्रस्तुत किया। इन वीरगाथाओं में लोरिक, मनियार, दीना–भदरी, हंसराज–वंशराज, कुंअर विजयमल्ल, इाल्हा–उदल, नटुआ दयाल सिंह, शीत–बसंत वगैरह प्रमुख। इन वीरगाथाओं में समय और स्थानीयता के अनुरूप दबे रूप में विद्रोह का स्वरूप व्यापक था।

भारतीय समाज में खासकर उत्तर बिहार के नेपाल के तराई वाले इलाके में ये देखा जाता है कि निम्न क्लास में या यूं कहें कि निम्न आर्थिक वर्ग में प्रेू को स्वीकार करने में और उसे खुले रूप में अभिव्यक्त करने में डर या संकोच का भाव रहा है। हालांकि मर्यादित प्रेम को इन्होंने समर्थन दिया है। सलहेस–कुसमा, नौका–बनिजरा, हिरनी–बिरनी, रेशमा–चूड़ामल, सारंगा–सदावृक्ष इत्यादि ऐसी ही प्रेमकथाएं हैं। इन सभी प्रेमकथाओं में नायक इन नायकों के वीरता पर न्यौछावर तो हैं, लेकिन मर्यादित रूप में ही उस पर मर–मिटाने को तैयार है, नायिका इन वीर नायकों पर मोहित नहीं होती। इसी तरह नायक भी नायिका के सौन्दर्य पर खुले रूप में आसक्त नहीं होता। हालांकि अन्दर ही अन्दर उसको पाने के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहता है और ये कहते हुए अपने से दूर रखता है कि उनका जन्म तो लोक कल्याण के लिए हुआ है।

इसके अलावा भी नटुआ नाच में पारिवारिक और साताजिक जीवन पर केन्द्रित कथानक भी प्रदर्शित होता है। ऐसे कथानक है– सुन्दर वन, रूना–झूना, शीत–बसंत तथा हंसराज–वंशराज वगैरह। इनमें अपनी सौतेली माँ के कारण बच्चे कष्ट पाते है। इन कथानकों में बच्चों का चरित्र जरूर है और ये बच्चे समय से पहले प्रौढ़ भी हैं और वीर भी। नटुआ नाच का एक और कथानक है 'मोतिया किसान'। इसमें जमीनदारी प्रथा की कुरीकतयों और जमीनदारों की स्वेच्छाचारिता

को दर्शाया गया हे। इसमें एक जमीनदार है जो अपने रैयत की पत्नी को चाहने लगता है और उस पर मोहित हो जाता है। जमीदार रैयत की पत्नी को पाने की जुगत में दिनरात लगा रहता है। अब वो उस किसान पर कर्ज अदा नहीं करने का मुकदमा चलाता है और उसे कारागार में डाल देता है तथा उसकी पत्नी को हड़प लेता है।

कार्यान्वयन :– कुछ बुजुर्ग कलाकारों से सम्पर्क करने पर पता चला कि नटुआ नाच के भी कई रूप हैं। पूर्वीइलाकों में (मैथिली भाषी अंचल में) तो लगता है कि पारसी रंग मंच शैली की छाप हौ, इसके कलाकार बड़ी–बड़ी मुद्रांए, मूवमेन्ट भी बड़े बड़े और कॉस्ट्यूम भी भारी भरकम और पार्ट की अदायगी भी पारसी रंगमंच की शैली में गूँज गरज के साथ अभिव्यक्त करते है। अतः कहा जाना चाहिए कि नटुआनाच की वेष–भूषा, रामलीला और पारसी रंगमंच तथा अन्य पारंपरिक नाट्यरूपों जैसी है। इसके विपरीत पश्चिमी क्षेत्र (भोजपुरी अचंल) में नटुआ नाच की शैली भिन्न हैं। यहां के कलाकारों से सम्पर्क करने पर पता चला कि आठ से दस, या इससे भी कम लोग (कलाकार) नाच कर लेते है। यहां कॉस्ट्यूम की प्रधानता है न लाईट वगैरह की, और न ही मंच की या बड़े मैदान (बड़ी जगह) की। बिना किसी उत्सव के भी इसके कलाकार जब खेतों में काम करके, मजदूरी करके, एक साथ जमा होते है तो दिन भी की थकान उतारने के लिए कुछ नशा पानी (गांजा या ताड़ी आदि) करके किसी भी गली, बैठक, या खलिहान में इकट्ठा होकर गाना बजाना शुरू करते है। बाने बजाने की आवाज से गांव के लोग जमा होने लगते है लोगों दर्शकों, की फरमाईश से नटुआ नाच के किसी कथानक की सामग्री एकत्रित होने लगती है तत्पश्चात् नाच प्रारंभ हो जाता है। इसके दर्शक भी मोहल्ले के ही लोग होते है। तीन चार बजनियां (वाद्य

बजाने वाले) अपना वाद्य यंत्र बजाते है, वाद्य यंत्र में ढोलक, मृदंग, झाल मंजीरा, करताल, बगैरह होता है। वाद्य बजने के साथ ही नटुआ द्वारा "नाच" शुरू हो जाता है, फिर एक एक करके साथी कलाकार कथानक के चरित्र के रूप में भागीदारी करने लगते है। इनका नाच इतना गतिवान और ऊर्जावान होता है कि कुछ लोग व्यंग में इसे "ढेलाफोड़वा" नाच के संज्ञा तक देते है। एक स्थानीय व्यक्तिने वार्तालाप के दौरान बताया कि "नटुआनाच" मतलब "ढेलाफोड़वा" नाच। हमनी एके "ढेलाफोड़वा" नाच कहीं लेसन" कहने का मतलब कि इसमें नृत्य इतना आकर्षक, गतिशील, और ऊर्जा से भरपूर होता है कि जमीन के छोटे छोटे ढेला (मिटटी का गोला) भी इनके पैरो के नीचे आ जाये तो फूटकर समतल हो जाये। इसीलिए इसे "ढेलाफोड़वा नृत्य" की संज्ञा दे दिया गया होगा। हरेक समुदाय की नाच–शैली में विभिन्नता है, किसी नाच मंडली में 18 से 20 कलाकार है तो दूसरे सिरिसीया गांव की जो नटुआ नाच मंडली है उसमें सिर्फ 7–8 कलाकार ही पूरी रात दर्शकों को बाधें रखते है।

नटुआ नाच के मंच का स्वरूप जिसे कहीं–कहीं रंगभूमि भी कहा जाता है, वस्तुतः चौकियों (तखत) को जोड़कर बनाया जाता है। जगह की उपलब्धता के अनुसार चौकियों की संख्या निर्भर करती है। आमतौर पर 15 फुट के करीब मंच बनाये जाते हैं, जो आठ–नौ (8–9) चौकियों को जोड़ने से मंच बन जाता है। मंच के ऊपर तिरपाल या दरी की छत बांस के सहारे बनाई जाती है। सामन्यतया मंच के चार कोनों पर चार बाँस को जमीन खोदकर हला दिया जाता है। जरूरत के मुताबिक चार से ज्यादा बाँस भी लगाया जा सकता है। बाँस गाड़ने से एक तो मंच पर छत बनाने की प्रक्रिया सहज ढंग से पूरी हो जाती है। दूसरे इन्ही बाँसों पर बल्ली बांधकर ध्वनि

व्यवस्था के लिए माईक और लाईट टांगना आसान हो जाता है। मंच में चौकियों को भी इन बाँसों के सहारे बांधकर मंच की मजबूती प्रदान की जाती है। कुछ इस तरह से आगे दिए स्केच चित्र के अनुसार मंच का निर्माण व दर्शकों के बैठने का स्थान है :–

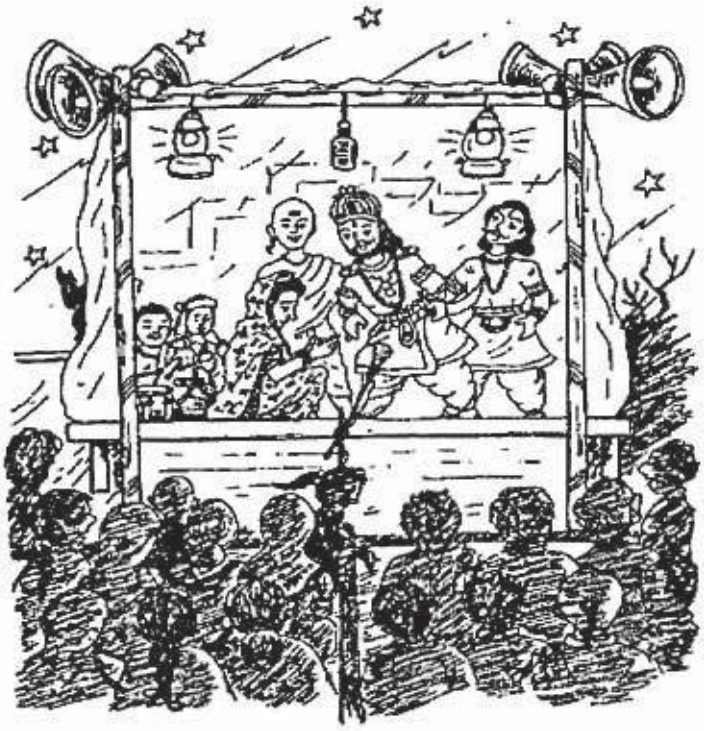

वैसे भी लोक विधाओं और लोक शैलियों को किसी नियम या विधान के अन्तर्गत बांधकर नहीं रखा जा सकता। इनके स्वरूप और स्थान की निश्चितता की गारंटी भी नहीं दी जा सकती। नटुआ नाच का स्वरूप भी स्थान परिवेश के अनुसार बदलता रहता है।

प्रदर्शन के लिए जगह या स्थान कलाकारों और दर्शकों द्वारा चुना गया है जो आयताकार हो तो मंच का स्वरूप कुछ इस तरह से रहेगा–

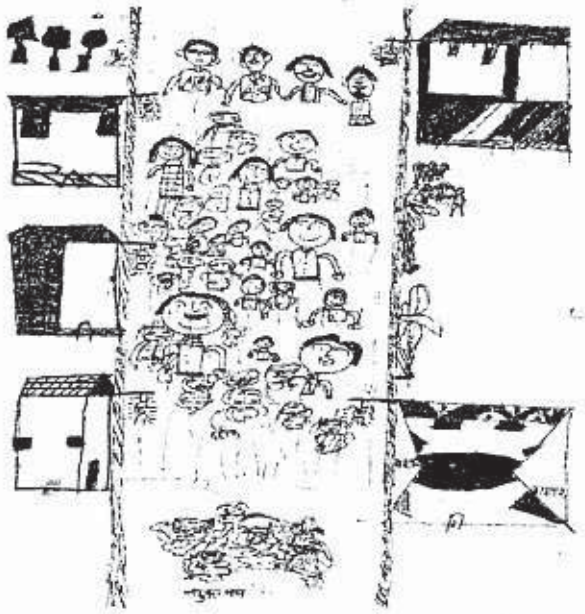

बिहार के परिचमोत्तर भागों में तो सिर्फ खाली स्थान ही नटुआ नाच के लिए पर्याप्त होता है। इसके लिए दुआर (द्वार) सड़क, खलिहान या गाँव का कोई सार्वजनिक स्थल जैसे– ब्रम्ह स्थान, पंचायत स्थल या मंदिर के प्रांगण को प्रदर्शन स्थल बना लिया जाता है।

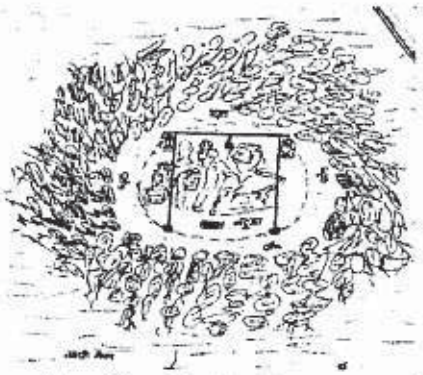

ध्वनि व्यवस्था और रौशनी के लिए मंच के ऊपर जो बाँस का सहारा तिरपाल या फूस की छत बनाने में लिया जाता है, उसी बाँस में माईक और गैस बत्ती बांध दिया जाता है। नाच के मंच को सामान्यतया 3 भागों में हम बांट सकते हैं– (1) मंच (अभिनय क्षेत्र) (2) नेपथ्य और (3) मंच के आगे का भाग

(1) मंच पर कलाकार (समाजी– वाद्य वृन्द दल) बैठते हैं और मुख्य अभिनय क्रिया यहीं सम्पन्न होती है। कुछ दलों में तो जो मुख्य नटुआ होता हैं उसको छोड़कर, बाकी कलाकार तैयार होकर– ड्रेस–अप होकर इन्हीं समाजी के साथ बैठते हैं। क्योंकि वाद्य यंत्र बजाने के अलावा कुछेक को अभिनय करना होता है जैसे– कोई व्यक्ति अगर मंजीरा बजा रहा होता है और जब उसका पार्ट आता है तो मंच पर वहीं से कूद पड़ता है।

(2) मंच के पीछे का क्षेत्र नेपथ्य कहलाता है। नेपथ्य का प्रयोग सजने–संवरने के रूप में किया जाता है। इस नेपथ्य भाग को तिरपाल या दरी वगैरह से घेर कर कमरानुमा बना दिया जाता है। सारे कलाकार इसी भाग में मेकअप करते हैं और ड्रेस–अप होते है। इसे हम ग्रीनरूम की संज्ञा दे सकते हैं। यह स्थल चूंकि मंच स्थल से बिलकुल सटा (करीब) रहता है, बस एक पर्दा या तिरपाल ही मंच और नेपथ्य भाग का फर्क करता है। इसलिए इस स्थल का प्रयोग अभिनेता आकाश भाषित संवादों को प्रेषित करने के लिए भी करता है। गांवों या छोटे कस्बों में आजकल जब कुछ लोग या स्कूल के बच्चे आपस में मिलकर कोई लिखित नाटक करने की सोचते हैं या करते हैं तो मंच के नाम उनके अन्दर भी इस प्रकार के मंच की कल्पना आती है।

(3) मंच के आगे का भाग वह भाग होता है, जहां से दर्शक दीर्घा शुरू होता है। जब मंच बनाया जाता है तो जहां से चौकियों को जोड़कर बांध लिया जाता है, वहाँ से आगे जमीन का कुछ भाग 'मंच भाग' के रूप में रस्सियों से या चूना पावडर से घेर लिया जाता है। मंच भाग को यदा–कदा अभिनेता या नर्तकों द्वारा उपयोग में लाया

जाता है। जैसे किसी राजमहल का सीन है, जिसमें बहुत सारे राज दरबारी बैठे हैं और उसी दृश्य में नाच–गाने का सीन है तो नाच गाने वाले सीन को इसी मंच भाग में दिखाया जाता है। इसी तरह यदि एक ही महल का दृश्य मंच पर दिखाया जाता है और युद्ध का मैदान इसी मंच के आगे वाले भाग पर दिखाया जाता है।

रूप–सज्जा और वेशभूषा के लिए नटुआ आज भी पारम्परिकता का निर्वाह करते हैं। वैसे भारत के विभिन्न इलाकों के लोक नाट्यों में रूप सज्जा का स्वरूप अभी तक परम्परागत ही है जैसे– मुर्दाशंख का प्रयोग, काजल, खड़िया, सिन्दूर, कुमकुम का प्रयोग प्रायः सभी लोक नाट्यों में अनिवार्यतः होता ही है। नटुआ भी पायः इन्हीं वस्तुओं का इस्तेमाल अपने रूप सज्जा के लिए करते है। तुख्यतः मुर्दाशंख ही मुख्य बेस (आधार) होता है। उसके बाद चरित्र के अनुसार खड़िया, काजल, कुमकुम, सिन्दूर इत्यादि से चारित्रिक विशेषताओं का निर्माण करते है।

वेश–भूषा भी अधिक चमकीली या भड़कीली होती है। राजा या कोई अमीर व्यक्ति के चरित्र निर्वहन के लिए गहरे बूटेदार मिर्जई या हाफ कोर्ट का प्रयोग होता हैं। दाढ़ी वाले पात्र के लिए खुद के द्वारा तैयार किए गए सन या पटसन से बनी हुई दाढ़ी या विग का इस्तेमाल होता है। हरेक पात्र लगभग रंगीन या सफेद धोती ही पहनते हैं, जिसे गांव के लोग 'मरदानी' कहते हैं।

Hand Props में तलवारें, त्रिशूल, शंख, गदा तीर धनुष, का प्रयोग भी होता है जो अधिकतर जगहों के मंडलियों में स्वयं के द्वारा लकड़ी या कागज, कूट या गत्ते की बनायी हुई होती है।

वेश–भूषा के बारे में भी नटुआ कलाकार ज़्यादा सहज पारम्परिक होता है। मुख्य पात्रों की वेश–भूषा पर सम्पन्न नाच मंडलियाँ काफी खर्च रिती है। वेश–भूषा सुन्दर चमकीलें और भड़करदार होता है। स्त्री पात्रों के लिए मुख्यतः साड़ी का ही इस्तेमाल होता है। 'देवी दुर्गा', या 'रानी–महारानी' इत्यादि पात्रों के लिए मुकुट बनाया जाता है। 'मुखौटों का प्रयोग भी नटुआ में होता है। जैसे सलहेस नाच में 'तोते, नटिन के लिए 'मोहन भैसा', यदि दुश्य रूप में मंच पर इन पात्रों को दिखाना हो, तो मुखौटो का इस्तेमाल नटुआ अपने नाख में कर लेता है।

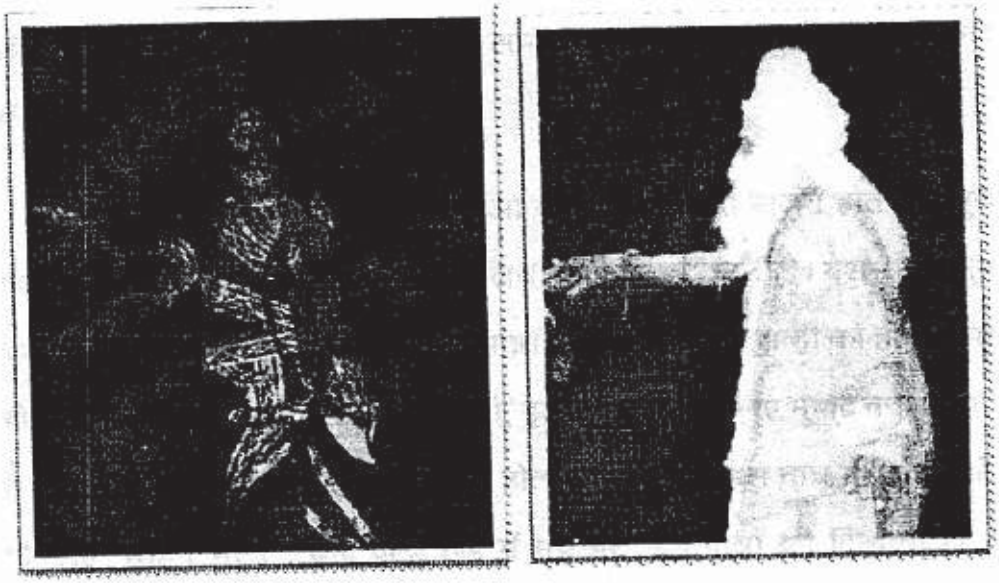

– **<u>निष्कर्षतः</u>** कह सकते हैं कि प्राचीन काल में 1500 ई.पूर्व से 1300 ईसा पूर्व में अधिकांशतः लोक नाट्यों का स्वरूप अनुष्ठानिक था, जो धीरे धीरे परिवर्तित इन लोक नाट्यों के स्वरूप पर किसी न किसी रूप में अनुष्ठानिक प्रभाव देखने को मिलता है। उस काल के कई नाट्य रूप आज भी भारतवर्ष के ग्रामीण अंचलों में अनुष्ठानिक रूपों में प्रदर्शित हो रहे हैं।

भारतीय आचार्यो के अनुसार कथा वस्तु के स्वरूप के अन्तर्गत तीन तत्वों का उल्लेख है–

(1) पूर्व रंग (2) घटना चक्र और (3) भरत वाक्य। नटुआ नाच में भी हम पाते हैं कि पूर्व रंग के चार चरणों के अन्तर्गत ही सूत्रधार–नट नटी का वार्तालप, जिसमें आगे आने वाले घटनाओं की जानकारी दे दी जाती है।

अतः हम कह सकते हैं कि पूरे नटुआ नाच के परम्परा में भी– (1) वस्तु (2) नायक और (3) रस की ही प्रधानता देखने को मिलती है। हालांकि नटुआ कलाकार कभी भी उपरोक्त तत्वों के बारे में सोचकर प्रदर्शन नहीं करते। उनके यहाँ तो सभी– (1) वस्तु (स्थान) (2) नायक (नटुआ) और (3) गायन (रस) इत्यादि तत्वों का तत्कालीन परिस्थितियों के मुताबिक इंप्रोवाइजेशन (आशु रचना) होता है। इसी तरह स्थान का भी– मंच स्थान या मंच व्यवस्था का स्वरूप भी इम्प्रोवाइज होता है, यही बात रूप–सज्जा, प्रकाश व्यवस्था और गायन– अभिनय पर भी लागू होती है।